## वनसंरक्षण

वनसंरक्षण ही एक ज्वलंत समस्या आहे. वनक्षेत्राचा ऱ्हास होण्यामागे अवैध वृक्षतोड आणि चराई, वनवणवे, अतिक्रमणे इत्यादी प्रमुख बाबी कारणीभूत ठरतात. राज्यातील वनसंपदेचे प्रभावी संरक्षण करण्यासाठी वन अधिकारी/कर्मचारी हे उपलब्ध साधन सामुग्रीच्या आधारे वनक्षेत्राची नियमित गस्त, आरागिरण्यांची तपासणी आणि तपासणी नाक्याव्दारे वाहतुकीतील वनोपजाची तपासणी ईत्यादी करीत असतात. यावेळी आढळुन येणाऱ्या वनगुन्हे प्रकरणी भारतीय वन अधिनियम १९२७ च्या तरतूदीनुसार कार्यवाही करण्यात येते.

**१ अवैध वृक्षतोड :-** मागील ३ वर्षात, २०११ ते २०१३ पर्यंत व जानेवारी ते मार्च २०१४ अखेर झालेली अवैध वृक्षतोड, त्यामुळे शासनाचे झालेले नुकसान आणि जप्त करण्यात आलेला माल याचा तपशिल खालील प्रमाणे आहे

| वर्ष | अवैध वृक्षतोड झालेल्या वृक्षांची संख्या | | अवैध वृक्षतोडीमुळे झालेले नुकसान (रु. लाखात) | | पकडण्यात आलेल्या मालाची किंमत (रु. लाखात) | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | केवळ सागवृक्ष | एकूण वृक्षसंख्या | केवळ साग वृक्षापासुन | एकूण | केवळ साग | एकूण |
| २०११ | ६४६१८ | १३९८६७ | ९२८.७४ | १०६२.२३ | ११९५.९३ | १२७७.१८ |
| २०१२ | ५६२९२ | १२६१३७ | ६६७.३५ | ८१४.८४ | १०७६.२० | ११८८.३० |
| २०१३ | ५४४२९ | १३९५८६ | ६०२.८६ | ७८६.५५ | १०७२.७७ | १२१२.७७ |
| २०१४ (जाने. ते मार्च) | ११६५९ | ३०३६२ | १४६.९८ | २००.६४ | २९२.८७ | ३२४.९१ |

**२ वृत्त निहाय अवैध कटाई** (जानेवारी ते मार्च २०१४)

| वनवृत्त | अवैध वृक्षतोड झालेल्या वृक्षांची संख्या | | अवैध वृक्षतोडीमुळे झालेले नुकसान (रु. लाखात) | | पकडण्यात आलेल्या मालाची किंमत (रु. लाखात) | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | केवळ सागवृक्ष | एकूण वृक्षसंख्या | केवळ साग वृक्षापासुन | एकूण | केवळ साग | एकूण |
| चंद्रपूर | ९२८ | २७२३ | ८.४९ | १०.३१ | ७.७४ | ८.२६ |
| गडचिरोली | ७४३ | ५७९९ | ४८.८२ | ६४.५५ | १८४.३९ | १९५.४८ |
| नागपूर | १०१६ | ४१०९ | ९.३३ | १८.१७ | १४.८५ | २१.७० |
| अमरावती | ९६४ | १७३७ | ९.०३ | १३.२४ | ९.५३ | ११.४७ |
| यवतमाळ | २९०६ | ३१४९ | २६.९८ | २७.२४ | २६.५७ | २६.९३ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| औरंगाबाद | १२३७ | १४२१ | ९.३३ | ९.५५ | १२.५२ | १२.७५ |
| नाशिक | १७७ | ७४९ | ९.४९ | १४.११ | ११.३४ | १४.५७ |
| धुळे | ११२३ | २८४३ | ४.७९ | ७.८१ | १०.८९ | ११.७४ |
| ठाणे | १०१३ | ४०४८ | ४.४६ | १०.७१ | २.६४ | ७.७३ |
| पुणे | १२ | ९० | ०.०७ | ०.३९ | ०.०१ | ०.१६ |
| कोल्हापूर | ५१६ | १७५७ | २.४४ | ९.१२ | १.६७ | २.८४ |
| वन्य.नागपूर | ६४५ | ११८३ | ९.१५ | ९.८७ | ६.३९ | ६.६५ |
| वन्य.नाशिक | २३० | ३९९ | १.१७ | १.३३ | १.०९ | १.०९ |
| वन्य.मुंबई | १४९ | ३५५ | ३.४३ | ४.२४ | ३.२४ | ३.५४ |
| **एकूण** | **११६५९** | **३०३६२** | **१४६.९८** | **२००.६४** | **२९२.८७** | **३२४.९१** |

**३ शासकीय कर्तव्य करीत असतांना अधिकारी/ कर्मचारी यांच्यावर झालेल्या हल्ल्याबाबत माहिती**

अवैध वृक्षतोडीला आळा घालण्यासाठी कार्यतत्पर असणाऱ्या वन अधिकारी / कर्मचाऱ्यांवर संघटीत अशा असामाजिक तत्वाकडून प्राणघातक हल्ले होत असतात. मागील ३ वर्षात व माहे जानेवारी ते मार्च २०१४ अखेर झालेल्या हल्ल्याची माहिती खालील प्रमाणे आहे.

| वर्ष | हल्ल्याच्या घटना | प्रभावित वन कर्मचारी/अधिकारी | मृत अधिकारी / कर्मचाऱ्यांची संख्या |
|---|---|---|---|
| २०११ | २९ | ११८ | -- |
| २०१२ | २६ | ७२ | |
| २०१३ | २२ | ५६ | -- |
| २०१४ (जाने. ते मार्च) | ५ | १३ | -- |

**४ वनगुन्हे :-** सन २०१३-१४ च्या दिनांक ०१/०४/२०१३ ला प्रलंबीत असलेल्या वनगुन्हयाची संख्या १४२४१ होती. दिनांक १/४/२०१३ ते ३१/०३/२०१४ पर्यंत दाखल वनगुन्हयाची संख्या ३१४९८ आहे. या दोन्ही पैकी म्हणजेच १४२४१ + ३१४९८ = ४५७३९ पैकी निकाली काढलेल्या वनगुन्हयांची संख्या ३५५५३ आहे, म्हणजेच सन २०१३-१४ मध्ये माहे ३१/०३/२०१४ अखेर वनगुन्हे निकाली काढण्याची टक्केवारी ७७.७३ टक्के आहे. न्यायालयीन प्रकरणे वगळता निकाली काढण्याची टक्केवारी ९०.८९ टक्के आहे.

**Disposal of forest offences pending as on 01-04-2013 and booked from 01-04-2013 to 31/03/2014**

| Sr. No | Circle | Forest offences as on 01/04/13 | Forest offences booked during 01-04-13 to 31/03/2014 | Total | Disposal of Forest offences during 01-04-2013 to 31/03/2014 | Balance forest offences as on 31/03/2014 | % of Disposal of March. -2013 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | Chandrapur | 189 | 1050 | 1239 | 1055 | 184 | 85.15 |
| 2 | Gadchiroli | 2349 | 3048 | 5397 | 4451 | 946 | 82.47 |
| 3 | Nagpur (T) | 1888 | 5839 | 7727 | 6565 | 1162 | 84.96 |
| 4 | Amravati | 954 | 1574 | 2528 | 1281 | 1247 | 50.67 |
| 5 | Yavatmal | 1508 | 3865 | 5373 | 4361 | 1012 | 81.17 |
| 6 | Aurangabad | 1262 | 1566 | 2828 | 2082 | 746 | 73.62 |
| 7 | Nashik (T) | 633 | 1941 | 2574 | 2077 | 497 | 80.69 |
| 8 | Dhule | 1042 | 2749 | 3791 | 2857 | 934 | 75.36 |
| 9 | Thane | 1274 | 3114 | 4388 | 3398 | 990 | 77.44 |
| 10 | Pune | 219 | 841 | 1060 | 810 | 250 | 76.42 |
| 11 | Kolhapur | 614 | 1904 | 2518 | 1915 | 603 | 76.05 |
| 12 | Nagpur (W.L.) | 1381 | 2135 | 3516 | 2446 | 1070 | 69.57 |
| 13 | Nashik (W.L) | 280 | 503 | 783 | 583 | 200 | 74.46 |
| 14 | Mumbai (W.L.) | 648 | 1369 | 2017 | 1672 | 345 | 82.90 |
| | **Grand Total** | **14241** | **31498** | **45739** | **35553** | **10186** | **77.73** |

**५ वनगुन्हे प्रकरणी सरकार जमा करण्यात आलेली प्रमुख वाहने :-** राज्यात मागील ३ वर्षात व माहे जानेवारी ते मार्च, २०१४ अखेर सदर वाहनांची संख्या खालील प्रमाणे आहे.

| कॅलेंडर वर्ष | सरकार जमा वाहने | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | ट्रक | ट्रॅक्टर | मेटॅडोर | जीप,कार, ट्रॅक्स,व्हॅन | सायकल | इतर |
| २०११ | ४ | ४ | १ | २५ | ५८६ | ३८७ |
| २०१२ | २३ | ८ | ४ | ३३ | २८८ | ३७४ |
| २०१३ | १२ | ४ | १ | २४ | ३१५ | १४३ |
| २०१४(जाने.ते मार्च) | २ | २ | ० | ४ | ७० | ८४ |

६ **वनवणवे :-** राज्यातील वनक्षेत्रास मागील ३ वर्षात व माहे जानेवारी ते मार्च, २०१४ लागलेल्या आगीबाबतची माहिती खालील प्रमाणे आहे.

| वर्ष | आगीच्या घटना | जळालेले वनक्षेत्र हेक्टर | नुकसान (लाख रु.) | % |
|---|---|---|---|---|
| २०११ | २७२९ | ३३१८२.४६ | १५.२९ | ०.५४ |
| २०१२ | ४७४३ | ७१४८१.६२ | ३४.०३ | १.१५ |
| २०१३ | २९२८ | २१०६४.५४ | १९.६८ | ०.३४ |
| २०१४ (जाने.ते मार्च) | ७८६ | ३९६५.३५ | ८.०४२ | ०.१३ |

**७ वनवणव्या बाबत उपाययोजना :-**

दरवर्षी वनांचे आगी पासुन संरक्षण करण्यासाठी आगीचा मोसम सुरु होण्यापूर्वी वनवणवा प्रतिबंध उपायायोजना तयार करण्यांत येतात. त्यानुसार जाळरेषा आखुन वनक्षेत्राचे लहान लहान भागात विभाजन करणे, आगीवर नियंत्रण ठेवण्यासाठी अग्निरक्षकाची नेमणुक करणे, आगीवर निगरानी ठेवण्यासाठी योग्य स्थळाची निवड करणे, वनक्षेत्रामध्ये आग लागु नये म्हणून वनक्षेत्राची नियमित गस्त करणे, जाळरेषा घेणे, आग लक्षात येताच स्थानिक गावक-यांच्या मदतीने लागलेली आग विझविणे, दुरदर्शन/आकाशवाणी सारख्या माध्यमातून वनांमध्ये लागलेल्या वनवणव्याच्या वाईट परिणामाबाबत ग्रामस्थांमध्ये जागरुकता निर्माण करणे, संयुक्त वन व्यवस्थापन समितीचे आग प्रतिबंधक उपायोजना राबविण्यासाठी तसेच आग विझविण्यासाठी सहकार्य घेणे व आगीच्या हंगामात माहीतीची देवाण/घेवाण सत्वर करणे इत्यादी उपाययोजना वनातील आगीवर नियंत्रण ठेवण्यासाठी नियमितपणे आखल्या जातात. तसेच वनवणवा नियंत्रणासाठी सन २०११.१२ मध्ये ११ फायर फायटिंग युनीट वनविभागांना पूरविणेत आले आहेत. तसेच सन २०१४-१५ मध्ये १९२ फायर फायटींग ब्लोअर्स प्रस्तावित करणेत आले आहेत.

भारतीय वन सर्व्हेक्षण यांच्या माध्यमातून १८ मार्च, २०१० नंतर उपग्रहामार्फत निदर्शनांस आलेल्या आगी संबंधात जळीत क्षेत्राची प्रत्येक जिल्ह्याची माहिती अक्षांश, रेखांशा सह भारतीय वन सर्व्हेक्षण यांच्या www.fsi.nic.in या संकेत स्थळावर रोज दुपारी १२.०० वाजता प्रदर्शीत (Upload) करण्यात येत आहे. तसेच S.M.S. व्दारे देखील संबंधित उपवनसंरक्षक यांना भारतीय वन सर्व्हेक्षण यांनी ही सुविधा सुध्दा उपलब्ध करून दिलेली आहे.

वनवणव्यामुळे महाराष्ट्रातील जंगलात दरवर्षी मोठ्या प्रमाणात नुकसान होते. जळीत क्षेत्राची अचूक माहिती त्वरित प्राप्त करण्यासाठी व वनवणसासंबंधी संवेदनशील क्षेत्र अचुकपणे निश्चित करून प्रतिबंधात्मक योजना आखण्यासाठी महाराष्ट्र वन विभाग व फॉरेस्ट सर्व्हे ऑफ इंडिया (FSI) यांच्या संयुक्त विद्यमाने MoU करण्यात येत असून याव्दारे विविध वनविभागामध्ये जळालेल्या क्षेत्राची व्याप्तीची माहिती वैज्ञानिकरित्या मिळेल.

८ **वन जमिनीवरील अतिक्रमणे :-** सर्वोच्च न्यायालयाने रिट याचिका क्रमांक २०२/९५ मधील इंटर लॉक्युटरी ॲप्लीकेशन क्रमांक ७०३/२००१ मध्ये दिनांक २३ नोव्हेंबर २००१ रोजी दिलेल्या आदेशात देशातील वन जमिनीवरील अतिक्रमणे नियमित करण्यांस केंद्र शासनास मनाई केली आहे. या पार्श्र्वभुमीवर केंद्र शासनाने त्यांच्या दिनांक ३० मे २००२ च्या पत्रान्वये दिनांक ३० सप्टेंबर २००२ पर्यंत सदर अतिक्रमणे हटविण्याबाबत सूचना दिल्यात. त्याचप्रमाणे सदर कार्यवाहीचे सुसूत्रिकरण व त्यावर प्रशासकीय संनियंत्रणासाठी विभीन्न स्तरावर समित्या स्थापन करण्याबाबतही सूचना केल्या होत्या.

दरम्यान शासनाने दिनांक १७ सप्टेंबर २००२, २७ सप्टेंबर २००२ आणि ३० सप्टेंबर २००२ च्या परिपत्रकान्वये अनुसूचित जमाती, अनुसूचित जाती, भटक्या जमाती, विमुक्त जाती, नवबौध्द तसेच दारिद्रय रेषेखालील येणा-या श्रेणीतील लोकांनी वन जमिनीवर केलेले अतिक्रमण हटविण्यास तात्पुरती स्थगिती दिली. त्यामुळे वन विभागाने अतिक्रमण हटविण्याची हाती घेतलेली कार्यवाही एकाएकी मंदावली. तथापि उपरोक्त श्रेणीतील व्यक्तीशिवाय इतरांनी केलेली अतिक्रमणे हटविण्याची कार्यवाही सुरु आहे.

शासन परिपत्रक क्रमांक एस-१०/२००७/१२५७/प्रक्र.३०९/फ-३, दिनांक १० नोव्हेंबर, २००९ अन्वये अनुसूचित जमाती व अन्य परांपरागत जंगल वासी (वन अधिकार मान्यता) अधिनियम २००६ चे अमलबजावणी अंतर्गत, तरतुदीनुसार अपात्र ठरणा-या कोणत्याही अतिक्रमण धारकांची अतिक्रमणे नियमित होणार नाहीत, सदर कायद्याच्या तरतुदीनुसार पात्र अतिक्रमणे त्वरीत नियमित करण्यांत यावीत मात्र सन २००५ नंतरची अतिक्रमणे कोणत्याही परिस्थितीत नियमित करु नये व अशी अतिक्रमणे निष्कासीत करण्याच्या कार्यवाहीस महसूल, वन व पोलिस विभागातील सर्व अधिका-यांनी सर्वतोपरी सहकार्य करावे व यासाठी विशेषत: पोलीस विभागाने वेळीच संरक्षण दयावे असे निर्देश आहेत.

पोलीस महासंचालक, महाराष्ट्र राज्य, मुंबई यांना उद्देशुन लिहीलेले मुख्य सचिव आदिवासी विकास विभाग मंत्रालय, मुंबई यांचे अर्धशासकीय पत्र क्रमांक वहका-२०११/प्रक्र.२६/का.१४, दिनांक ९

फेब्रुवारी २०११ अन्वये वनहक्क अधिनियम-२००६ या कायद्याचा गैरफायदा घेऊन जंगल तोड करुन वनजमिनीवर अतिक्रमण केलेले आहे. असे अतिक्रमण अवैध असुन ते काढणे आवश्यक आहे. त्यामध्ये असामाजिक व्यक्ती सक्रिय असुन, त्या वनअधिकाऱ्यांना जुमानत नाहीत व त्यांना धमकावतात, वनातील असे अतिक्रमण काढण्यासाठी अतिरिक्त पोलीस बलाची आवश्यकता असुन, त्यासाठी अतिरिक्त पोलीस बल उपलब्ध करुन द्यावे अशा सुचना निर्गमित केलेल्या आहेत.

शासन परिपत्रक क्रमांक एस-१०/२०१२/प्रक्र.४१२/फ-३, दिनांक ८ ऑगस्ट, २०१३ अन्वये शासकीय वनजमिनीवरील संघटित अतिक्रमण आंदोलनाबाबतच्या गंभीर परिस्थितीवर वनहक्क अधिनियम-२००६ चा चुकीचा अर्थ लावुन अनुसूचित जाती जमातीच्या लोकांना वनजमिनीवर अतिक्रमण करण्यास प्रवृत्त केले जाते. अतिक्रमण प्रतिबंधक पथकावर दगडफेक वा वनअधिकारी /कर्मचा-यांवर हल्ला करण्यांत येतो. अतिक्रमक व स्थानिक गावक-यांमध्ये वाद होतात त्यांचे रुपांतर दगली होण्याची शक्यता नाकारता येत नाही. याबाबी विचारात घेवुन जिल्हाधिकारी व पोलीस अधिक्षक, वनविभागाचे अधिकारी, आदिवासी विकास विभागाच्या अधिका-यांनी व्यक्तीशः लक्ष ठेवुन परिस्थितीनुसार आवश्यक त्या प्रतिबंधात्मक उपाययोजना करण्याच्या सुचना निर्गमित केलेल्या आहेत.

शासन परिपत्रक क्रमांक जमिन-०३/२००९/प्रक्र.१३/ज-१, दिनांक ७ सप्टेंबर, २०१० व शासन परिपत्रक क्र. जमिन-०७/२०१३/प्रक्र.३७४/ज-१,दिनांक १० ऑक्टोंबर २०१३ अन्वये शासकीय जमिनीवरील अतिक्रमणास प्रतिबंध, निष्कासीत करणे, फिर्याद दाखल करणे बाबत निर्देशामध्ये शासकीय जमिनीवर अतिक्रमण केल्यास कायदेशीर कारवाईचा इशारा देणे, अतिक्रमण झाल्याचे निदर्शनास आल्यास सदर अतिक्रमण तात्काळ निष्काषीत करण्याची कार्यवाही करावी, शासकीय जमिनीवर अतिक्रमणास प्रतिबंध करणे जमिन ज्या विभागाच्या ताब्यात आहे त्या विभागाची जबाबदारी असुन संबंधित तलाठी/मंडळ अधिकारी, वनअधिकारी, ग्रामसेवक, नगरपालिकेचे मुख्याधिकारी, आणि अन्य प्रकारात शासकीय जमिन ज्या विभागाच्या ताब्यात आहे त्या विभागाचे अधिकारी यांनी तात्काळ पोलीसात फिर्याद देण्यांची दक्षता घ्यावी अशा सुचना निर्गमित केलेल्या आहेत.

वनहक्क कायद्या अंतर्गत अर्जदारांचे दावे तपासण्याची कार्यवाही क्षेत्र पातळीवर सुरू असल्यामुळे नामंजुर दाव्यामधील अतिक्रमण हटविण्याची कार्यवाहीचे कामे प्रलंबित आहे.

सन २०११-२०१२ ते २०१३-२०१४ अखेर पर्यंतच्या कालावधीत हटविण्यात आलेली अतिक्रमणा बाबतची माहिती खालील प्रमाणे आहे.

| वर्ष | सुरवातीची शिल्लक | झालेले अतिक्रमण क्षेत्र हेक्टर | एकुण | हटविण्यांत आलेले अतिक्रमण क्षेत्र हेक्टर | वर्षाअखेर शिल्लक अतिक्रमण क्षेत्र हेक्टर |
|---|---|---|---|---|---|
| २०११-१२ | ८४७७३.००० | ३३६९.३८० | ८८१४२.३८० | १९२९.१८० | ८६२१३.२०० |
| २०१२-१३ | ८६२१३.२०० | १६१६.३३९ | ८७८२९.५३९ | १७७४९.३९३ | ७००८०.१४५ |
| २०१३-१४ | ७००८०.१४५ | ५१५२.६५४ | ७५२३२.७९९ | ७३४२.४१८ | ६७८९०.३८१ |

**८.१ संघटित अतिक्रमण व त्यावर केलेली कार्यवाही :-** पुणे वनवृत्तातील पुणे व जुन्नर विभागात लोकशासन आंदोलनकर्त्याचे सामुहिकरित्या वनजमिनीवर अतिक्रमणाच्या उग्रप्रवृत्तीत मोठया प्रमाणात वाढ झाली आहे. त्यावर आळा घालण्यासाठी राज्य राखीव पोलीस दलाचा सक्रिय सहभागाने जुन्नर विभागातील अतिक्रमण काढण्याची कार्यवाही दिनांक २५/१०/२०१३ ते ३/११/२०१३ व दिनांक ७/११/२०१३ या कालावधीत शिरुर, ओतुर, खडे, घोडेगाव, चाकण व नारायनगाव या वनक्षेत्रात एकुण ५० गावामध्ये १३५.३६ हेक्टर क्षेत्रावरील अतिक्रमण हटविण्यांत आले आहे. एकुण ३०८२ अतिक्रमण धारकावर भारतीय वन अधिनियम, १९२७ च्या कलम २६ अंतर्गत गुन्हे दाखल करण्यांत आली आहेत. व आरोपींना अटक करण्यांत आली असुन न्यायालयाने ८/११/२०१३ पर्यंत न्यायालयीन कोठडी देण्यांत आली आहे. त्याच प्रमाणे चांडोह, डिंगारे व हिवरे येथील १३ अतिक्रमण धारकांना अटक करुन १३/११/२०१३ पर्यंत न्यायालयीन कोठडी देण्यांत आलेली आहे. तसेच पुणे वनविभागातील एकुण १५ गावामध्ये १४२ हेक्टर क्षेत्रावर एकुण १४६५ अतिक्रमण धारकांवर भारतीय वन अधिनियम, १९२७ च्या कलम २६ अन्वये गुन्हा दाखल करुन मौजा लोनीकाळभोर येथील १३६, हिंगणगाव येथील २५, कामगाव येथील ४६, शिरपूर येथील ७२ आरोपी व पेडगांव येथील ६९ आरोपींना दिनांक १२/११/२०१३ पर्यंत न्यायालयीन कोठडी देण्यांत आली आहे. त्या क्षेत्रातील अतिक्रमण दिनांक २८/१०/२०१३ ते ३१/१०/२०१३ या कालावधीत अतिक्रमण हटविण्यांत आले आहे.

धुळे वनवृतात ब-याच ठिकाणी अनुसूचित जमाती व इतर पारंपारीक वन निवासी वन हक्काची मान्यता अधिनियम-२००६ चा चुकीचा अर्थ लावून अनुसूचित जाती व जमातीच्या लोकांना वन जमिनीवर अतिक्रमण करण्यासाठी प्रवृत्त केले जाते. परिणामी अवैध वृक्षतोड होवून नविन अतिक्रमण होत आहेत. या अतिक्रमणांना प्रतिबंध केला असता वनकर्मचा-यांवर दगडफेक व हल्ले करण्यांत येतात. यावल

वनविभागात गारबर्डी येथे दिनांक २०/६/२०१३ व पाल येथे दिनांक १०/९/२०१३ रोजी मोठया संख्येने अतिक्रमणाच्या उद्वेशाने आक्रमक होवून हत्यारे घेवून वनक्षेत्रात प्रवेश केला. तर धुळे वनविभागातील ठाणेगाव येथे दिनांक ९/७/२०१३ रोजी शासकीय वाहनाचे नुकसान केले जांभोरा येथील कक्ष क्रं. ३६५ मध्ये नांगरटी केल्यामुळे त्यास प्रतिबंध संयुक्त वन व्यवस्थापन सदस्यांनी केल्यामुळे ग्रामस्थांत सोबत हिसंक कारवाया झाल्या. दिनांक ५/७/२०१३ रोजी हेकळवाड या गावात फासेपारधी समाजाचे मोठया संख्येने स्त्री पुरुषांनी अचानकपणे क्षेत्रीय अधिकारी कर्मचारी यांच्यावर हत्यारे घेवून हल्ला केला. त्यामध्ये १४ वनकर्मचारी व ग्रामस्थ जखमी झाले. गारबर्डी येथील घटनेबाबत गुन्हा नोंदविण्यांत आला आहे. वरील संबंधीत गावातील लोकांना चौकशीसाठी बोलविण्यांत आले. ग्रामस्थाची समजुत काढून समाजस्यांने प्रकरण हाताळण्यात आले. वनक्षेत्रपाल वैजापूर, देवझिरी, चोपडा, वनक्षेत्रीय कर्मचारी, एस. आर. पी. नायब तहसीलदार चोपडा यांचेसह दिनांक २०/७/२०१३ रोजी कक्ष क्रं. २४२ मधील अतिक्रमण हटाव मोहीम राबविण्यात आली. अतिक्रमण हटाव मोहीमेत खा-यापाडव गावातील १०० ते १२५ आदिवासी बांधवांनी शासकीय कामात अडथळा निर्माण केल्याने त्यांना ताब्यात घेण्यांत आले. या घटनेत निर्माण झालेली परिस्थिीती व कर्मचा-यांचे संरक्षणार्थ हवेत गोळीबार करण्यांत आला. आरोपी श्री. वना नुरजी पावरा रा. खाऱ्यापाडाव हा आदिवासी जमावाचा महोरक्या आहे त्याची चौकशी करीता वनकस्टडी मिळविण्यांत आली.

दिनांक ३० मे, २०१३ रोजी मा. प्रधान सचिव (वने) यांनी पाल येथील बैठकीत सुचविल्या वरुन अभयारण्य व त्या सभोवतालच्या १५ गावांचा सुक्ष्म आराखडा तयार करुन विविध विभागांच्या योजनांचा समावेश करुन आदिवासींना रोजगाराच्या संधी देवून त्यांचे भागात विकास कामे प्राधान्याने केल्या जाणार असे सांगीतले. वनसंरक्षक (वन्यजीव) नाशिक व उपवनसंरक्षक यावल यांनी आदिवासी बांधवांना सभा घेवून परिस्थिती सांभाळून वनाचे महत्व व अतिक्रमणाचा दुष्परीणामाबाबत प्रबोधन करुन त्यांना आश्वत करुन क्षेत्रातील अतिक्रमणाची समस्या समोपचाराने सोडविण्यांत आली आहे.

**९ बिनतारी संदेश यंत्रणा** :- अवैध वृक्षतोड जास्त प्रमाणात होणा-या तसेच त्याठिकाणी वनसंरक्षण प्रभावीपणे व्हावे या दृष्टीकोनातून नागपूर, ठाणे, धुळे आणि चंद्रपूर व अमरावती वनवृत्तात बिनतारी संदेश यंत्रणा कार्यान्वीत झालेली असुन त्याचा तपशिल खालील प्रमाणे आहे.

| अ.क्र. | वनवृत्त | बेस स्टेशन | मोबाईल स्टेशन |
|---|---|---|---|
| १ | २ | ४ | ५ |
| १ | चंद्रपूर | ४४ | २८३ |
| २ | नागपूर | ७५ | २३५ |
| ३ | धुळे | ८३ | १६७ |
| ४ | ठाणे | ९० | ३६८ |
| ५ | अमरावती | ५२ | २०० |
| | **एकूण** | **३४४** | **१२५३** |

सन २०१३-१४ मध्ये ठाणे, नागपूर, चंद्रपूर, धुळे, अमरावती, या वनवृत्तात बिनतारी संदेश यंत्रणेचे सबळीकरण व देखभाल करणेकरिता एकूण राज्य योजने अंतर्गत परवाना शुल्क व स्वामित्व शुल्क रक्कम ९६.६९ लक्ष व तेरावा वित्त आयोग अंतर्गत १४.८९ लक्ष असे एकूण १११.५८ लक्ष भरणा करण्यात आला आहे. सन २०१४-१५ मध्ये राज्य योजने अंतर्गत रू. १००.०० लक्ष व १३वा वित्त आयोग अंतर्गत रू. २०६.०० लक्ष बिनतारी संदेश यंत्रणेचे बळकटीकरणासाठी प्रस्तावीत करणेत आला आहे.

**१० शस्त्रागार :-** एकूण बांधकाम करावयाच्या शस्त्रागाराचे उद्दिष्ट ५१ असुन, सन २००८ ते २०१० या कालावधीत एकूण २५ शस्त्रागाराचे बांधकाम पूर्ण झालेले आहे.

**११ शस्त्र/दारूगोळा :-** सन २०००-२००१ ते २०११.१२ पर्यंत ७२० नग ९ एमएम पिस्तोल, ५१४ नग ७.६२ एम एम एसएलआर रायफल, ४७६०७ नग पिस्तोल दारूगोळा तथा ७५२०० नग रायफल दारूगोळा खरेदी करण्यात आलेले आहे. सन २०१३-१४ करिता, पिस्तुल साठी ९एमएम १५१५ दारुगोळा खरेदी करण्यात आलेला आहे. सदर दारूगोळा, ऑर्डनन्स फॅक्टरी, खडकी, पुणे येथून उचल करण्याची प्रक्रिया सुरु आहे.

२. वरील पैकी प्राप्त शस्त्र व दारूगोळ्याचे वाटप हे खालील प्रमाणे आहे.

| अ.क्र. | वनवृत्त | या कार्यालयाकडून वाटप केलेले | | या कार्यालयाकडून वाटप केलेला दारूगोळा | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | पिस्तोल | रायफल | पिस्तोल करीता | रायफल करिता |
| १ | चंद्रपूर | ४० | २५ | २९८० | ३७५० |
| २ | गडचिरोली | ५० | ४९ | २३६० | ६५५० |
| ३ | नागपूर | ७८ | ४० | ६६५० | ९२६३ |
| ४ | अमरावती | ५० | ६० | ३१७० | ५३०० |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ५ | यवतमाळ | ५० | ५१ | २६२० | ६५०० |
| ६ | औरंगाबाद | ४५ | ३३ | २८७० | ४५०० |
| ७ | नाशिक | ४१ | ७० | ३२६० | ५७०० |
| ८ | धुळे | ८६ | ६७ | ६५१० | ५५०० |
| ९ | ठाणे | ९९ | ३६ | ८७४९ | ८३१२ |
| १० | पुणे | ९ | १३ | १०९० | १८०० |
| ११ | कोल्हापुर | ६४ | १२ | २५२० | २७०० |
| १२ | नागपूर वन्यजीव | ७८ | ४३ | ११०० | ३५० |
| १३ | नाशिक वन्यजीव | १३ | १० | ५५० | ८०० |
| १४ | मुंबई वन्यजीव | १२ | ० | ५५० | ० |
| | नाशिक येथे प्रशिक्षणासाठी | | | २६२८ | २६७५ |
| | **एकुण :-** | **७१५** | **५०९** | **४७६०७** | **६३७००** |
| | राखीव | **५** | **५** | **०** | **११५००** |
| | **एकूण** | **७२०** | **५१४** | | **७५२००** |

**१२ शस्त्र हाताळण्याचे प्रशिक्षण :-**

सन २००२-२००३ पासुन वन अधिकारी / कर्मचारी यांना शस्त्र हाताळण्याचे प्रशिक्षण देणे सुरू करण्यात आले, त्यानुसार आता पर्यंत एकुण ७३६ वन अधिकारी/कर्मचारी यांना शस्त्र हाताळण्याचे प्रशिक्षण देण्यात आलेले आहे.

महाराष्ट्र पोलीस ॲकेडमी, नाशिक येथून शस्त्र हाताळण्याचे प्रशिक्षण घेतलेल्या एकूण अधिकारी /कर्मचाऱ्यांची संख्या ६३३ आहे. तसेच शस्त्र हाताळण्याबाबत प्रशिक्षकांचे प्रशिक्षण देण्यात आलेल्या अधिकारी/ कर्मचाऱ्यांची संख्या १०३ आहे. सदर प्रशिक्षकांचे प्रशिक्षक (ToT) मार्फत शस्त्र हाताळण्याचे प्रशिक्षण देण्यात आलेल्या अधिकारी / कर्मचाऱ्यांची एकूण संख्या १०२२ आहे. मार्च-२०११ अखेर एकुण १७५८ कर्मचा-यांना शस्त्र हाताळण्याचे प्रशिक्षण देण्यांत आलेले आहे. सन २०११.१२ मध्ये शस्त्र हाताळण्याचे प्रशिक्षीत करणेसाठी वनवृत्त स्तरावर उद्दिष्ठ देण्यांत आले होते. त्याअनुषंगाने १२९९ अधिकारी/कर्मचारी यांनी शस्त्र हाताळण्याचे प्रशिक्षण घेतलेले आहे. सन २०१३-१४ मध्ये यवतमाळ १५२, ठाणे ११६ व चंद्रपूर १४८ असे एकूण ४१६ अधिकारी / कर्मचा-यांना शस्त्र हाताळण्याचे प्रशिक्षण पोलीस विभागाच्या मदतीने देण्यात आले. आता पर्यंत शस्त्र हाताळण्याचे प्रशिक्षण घेतलेल्या एकूण अधिकारी / कर्मचाऱ्यांची संख्या ३४७३ आहे.

**१३ विधी सल्लागार**:- न्यायालयासमोर शासनाची बाजू प्रभावीपणे मांडण्याच्या दृष्टीने न्यायालयात शासनातर्फे दाखल होणारे प्रतिज्ञापत्रात/ जबाबात गुणवत्ता असणे आवश्यक आहे. माननीय मुंबई उच्च न्यायालयाच्या नागपूर खंडपीठाने रिट याचिका क्र. १२७७/२००० संदर्भात दिनांक ३० एप्रिल, २००४ रोजी दिलेल्या आदेशात पुढील निदर्शने नोंदविलेली आहेत.

*"That on earlier occasion this court has already directed the Forest Department to create legal cell in each division and the officers incharge of the legal cell should monitor the cases pending in the Court."*

उक्त पार्श्वभूमीच्या अनुषंगाने, महाराष्ट्र शासन, महसूल व वन विभाग, शासन निर्णय क्रमांक एस-३०/१२/२०१२/प्र.क्र.२३३/फ-६ दिनांक १३ नोव्हेंबर, २०१४ अन्वये वन विभागासाठी कंत्राटी पध्दतीने ११ विधी सल्लागारांची नियुक्ती करण्यास शासन मान्यता प्रदान करण्यात आली आहे. एप्रिल, २०१४ अखेर पर्यंत ९ वनवृत्तात विधी सल्लगारांची नियुक्ती शासनाने दिलेल्या मार्गदर्शक सूचनेनुसार करण्यात आली असून उर्वरीत २ वनवृत्तात विधी सल्लागारांची नियुक्ती करण्याची कार्यवाही सुरू आहे.

**१४ टेलीफोन हेल्प लाईन जोडणी, कंट्रोल रूम बाबत :-** मा. मंत्री (वने), महाराष्ट्र राज्य, यांचे पत्र क्र. मं/वने/नोट/जनरल/१८२, दिनांक ०७/०३/२००८ अन्वये, वनविभागात अवैध वृक्षतोड, अतिक्रमण, वनवणवा, अवैध शिकार, अवैघ चराई अशा प्रकारचे अनेक गुन्हे बाबत वेळीच विभागाला माहिती मिळण्याच्या दृष्टीकोनातून वनविभागाकरिता Short Code No. "१५५३१४" मिळालेला असून सदर शॉर्ट कोड क्रमांक एकूण २५ जिल्ह्यांच्या ठिकाणी (उपवनसंरक्षक कार्यालयात) व ४ तालुक्यांचे ठिकाणी (उपवनसंरक्षक कार्यालयात) तसेच ४ संवेदनशिल/ अतिसंवेदनशिल तालुक्यांच्या ठिकाणी असे एकूण ३३ ठिकाणी नियंत्रण कक्ष स्थापित करून जोडण्यात आलेला आहे.

२. वन विभागास मिळालेला हेल्प लाईन नंबर "१५५३१४" व वेबसाईट www.mahaforest.nic.in वनविभागांच्या वाहनांवर लावून तसेच इतर माहिती व प्रसिध्दीच्या माध्यमातून आम जनतेत प्रसारीत करण्याबाबत सर्व मुख्य वनसंरक्षक/वनसंरक्षक (प्रादेशिक) यांना कळविण्यात आले आहे.

**१५ क्षेत्रिय कर्मचाऱ्यांना भ्रमण ध्वनी संचाचा पुरवठा करणे :-** वनवणवा, अवैध चराई,अवैध कटाई, अतिक्रमण यासारख्या बाबींवर नियंत्रण ठेवणेकरीता क्षेत्रीय कर्मचाऱ्यांना भ्रमणध्वनी देणे शासनाने ठरविलेले आहे. त्या अनुरोधाने केंन्द्र पुरस्कृत योजने अंतर्गत **१२०९ भ्रमणध्वनी** खरेदी करण्यांत आलेले असुन त्याचे वृत्तस्तरावर वाटप केलेले आहे.

**१६ तपासणी नाके :-** वनक्षेत्राचे संरक्षण,अवैध वृक्षतोड रोखणे अवैध तोड झालेल्या मालाची बेकायदेशीर वाहतुक आणि वन्यजीवाची शिकार व व्यापार यावर नियंत्रण ठेवणेकरीता तसेच वनगुन्हा शोधून काढणेकरीता राज्यांमध्ये मोक्याच्या ठिकाणी ३६६ स्थाई व ९६ अस्थाई असे एकुण ४६२ तपासणी नाके उभारण्यांत आलेले आहेत. सन २०१३-१४ मध्ये ११ तपासणी नाक्यांचे बळकटीकरणासाठी रू. ५५.०० लक्षचा प्रस्ताव सादर करण्यात आला होता. शासनाकडून ४८.४० लक्ष ची मंजूरी प्राप्त झालेली आहे, उर्वरित नाक्यांचे टप्प्याटप्प्याने पुढील वर्षात बांधकाम व बळकटीकरण करण्यात येईल.

**१७ संरक्षण कुटीचे (Protection Hut) बांधकाम तसेच बोरवेल खोदणे :-** वनामधे रस्ते व निरीक्षण पथ यांचे जाळे (Network) आहे. याच रस्त्याचा वापर अवैध कटाई व नंतर वाहतुक यासाठी केला जातो. वन्यजीव विभागामध्ये संरक्षण कुटया बांधण्यांत आलेल्या आहेत. या संरक्षण कुटयामुळे अवैध कटाई व वाहतुक यावर प्रभाविरित्या आळा घालण्यात मदत मिळाली आहे. त्यामुळे वनविभागामध्ये सुध्दा मोक्याच्या ठिकाणी (Strategic Point) संरक्षण झोपडीचे बांधकाम करण्याची आवश्यकता आहे. या संरक्षण झोपडीमध्ये वनकर्मचारी त्या ठिकाणी उपस्थित राहुन आजूबाजूच्या परिसराचे संरक्षण प्रभाविरित्या करु शकतील.

**१८. निरीक्षण मनोरे बांधणे :-** आजपर्यन्त विविध योजने अंतर्गत एकूण १३६ निरिक्षण मनोऱ्यांचे बांधकाम करण्यात आलेले आहे.

**१९ जीप खरेदी :-** वनक्षेत्र स्तरावर वनसंरक्षणासाठी सन २०१२.१३ या वर्षाकरीता १०० नवीन जीप खरेदी करणेत आल्या आहेत. सन २०१३-१४ मध्ये फिरत्या पथकाचे सक्षमीकरण या योजनेअंतर्गत ४ जीप खरेदी करण्यात आल्या आहेत.

**२० मोटार सायकल खरेदी :-** वन विभागातील वनक्षेत्रात होत असलेल्या अवैध वृक्षतोडीवर नियंत्रण ठेवण्यासाठी तसेच नक्षलग्रस्त व तस्करी प्रभावित वनक्षेत्रात नियमित गस्त करून जंगलाचे संरक्षण करण्याकरि त्या क्षेत्रात कार्यरत असलेल्या वनपालांना देवतळे समितीच्या शिफारसीनुसार मोटार सायकल पुरवठा करण्याचे प्रस्तावित करण्यात आले होते, त्यानुसार सन २०१३-१४ मध्ये १३ वा वित्त आयोगाअंतर्गत गडचिरोली वनवृत्तासाठी ४३ तसेच चंद्रपूर वनवृत्तासाठी १७ मोटार सायकल खरेदी करण्यात आल्या आहेत.

**२१. गुप्त सेवा निधी :-** पोलीस विभागाच्या धर्तीवर तसेच जनहित याचिका क्र. १२७७/२००० च्या अनुषंगाने वनविभागात गुप्त सेवा निधी स्थापन करण्याबाबत शासन पत्र क्रमांक टिआरएस-

१२/२०००/प्रक्र.५६६/फ-६, दिनांक ५/२/२०१३ अन्वये वित्त विभागाने दिनांक २२/१/२०१३ अन्वये आकस्मिक खर्च (सुधारणा) नियम १९६५ मध्ये सुधारणा करुन त्यात वनविभागाचा समावेश झाल्याबाबत अधिसूचना प्रकाशित केली आहे. तसेच शासनाकडून सदर निधीचा विनियोग करण्याबाबतची नियमावली मंजुर करण्यांत आली आहे. सन २०१२.१३ मध्ये रक्कम रुपये १.९८ लाख खर्च करण्यांत आलेला आहे. (वनवृत्त नागपूर-०.१२ लक्ष, गडचिरोली-१.५१, बोरीवली वन्यजीव-०.३५) तसेच सन २०१३-१४ मध्ये रक्कम **७.६५ लाख** खर्च करण्यात आलेला आहे. (वनवृत्त चंद्रपूर ०.२२, नागपूर ०.६५, धुळे ०.६०, यवतमाळ ०.७५, ठाणे ०.०६, गडचिरोली ३.६०, नाशिक (वन्यजीव) १.५० व मुंबई (वन्यजीव) ०.३० लक्ष

**२२. PDA/Smart Phone :-** वन विभागाने संगणकीकरण करणेसाठी राबविण्यात येत असलेल्या ICT प्रकल्पांतर्गत **PDA/Smart Phone** उपकरण खरेदी करणेबाबत दिनांक १४/०६/२०१३ रोजी, मंत्रालय, मुंबई येथे उच्चाधिकारी समितीची बैठक आयोजित करण्यात आली होती. सदर बैठकीत झ ालेल्या चर्चेचे अनुषंगाने सर्वानुमते प्रकल्पाच्या Pilot testing चा एक भाग म्हणून सद्यस्थिसतीत २०० PDA/Smart Phone उपकरण क्षेत्रिय स्तरावर रक्कम रु.८०००/- प्रती PDA/Smart Phone प्रतिपूर्ती करणे या अटीवर पुरवठा करण्यात आलेले आहे. त्याच्याच यशस्वीतेवर दिनांक ३१ ऑगष्ट २०१३ रोजी झालेल्या उच्चाधिकार समितीच्या बैठकीत PDA/Smart Phone च्या तांत्रिक निकषांना मंजुरी देत सर्व क्षेत्रिय कर्मचा-यांकरीता एकूण ७००० PDA/Smart Phone खरेदी करण्याचा निर्णय घेण्यात आला आहे. **आतापर्यंत २२०० PDA/Smart Phone** उपकरण खरेदी करण्यात येऊन पात्र क्षेत्रीय कर्मचाऱ्यांना वाटप करण्यात आली आहेत.

**२३. व्याघ्र कक्ष समिती :-** जिल्हा पोलीस अधिक्षक यांचे अध्यक्षतेखाली स्थापन केलेल्या जिल्हास्तरीय व्याघ्र कक्ष समितीचे सभेत वन्यजीवाची शिकार अवैध वृक्षतोड हयाबाबत चर्चा करून आवश्यक त्या ठिकाणी पोलीसाचे सहकार्य प्राप्त करण्यात येते.

**२४ बिट निरीक्षण कार्यक्रम :-** स्थाई आदेश क्रमांक ३७ मध्ये दिलेल्या मार्गदर्शक सुचनेनुसार वनरक्षक, वनपाल, वनक्षेत्रपाल, सहाय्यक वनसरक्षक, यांना नियतक्षेत्र तपासणीचे दिलेल्या मापदंडानुसार कार्यवाही केली जाते. तसेच शासन निर्णय दिनांक ८/५/२००३ मध्ये दिलेल्या वनसंरक्षण कार्याचे सुधारीत मापदंडा प्रमाणे अतिसंवेदनशिल/संवेदनशिल/व सर्व साधारण नियतक्षेत्राची वर्गवारी करुन त्यानुसार जंगल तपासणी केली जाते.

**२५ ग्रामीणांच्या सहभागातून संयुक्त वनव्यवस्थापन:-** या कार्यक्रमाविषयी महाराष्ट्र राज्यात १२५९५ संयुक्त वन व्यवस्थापन समित्या स्थापन करण्यांत आलेल्या असुन त्यांच्या द्वारे अवैध वृक्षतोडीवर नियंत्रण ठेवणे व वनाचे संरक्षण करणे आणि वनवणव्यापासुन संरक्षण करणे इ. कामे केली जातात. तसेच स्थानिक जनतेस वनांचे महत्व विषद करून त्याव्दारे जनजागृती करणे, वनगुन्ह्यांसंबंधी गुप्त बातमी खब-याकडून  प्राप्त करुन छापे घालणे व अवैध माल जप्त करणे इ. कामे केली जातात.

**२६  एस. आर. पी. :-** वनविभागात नागपूर, धुळे, व ठाणे वनवृत्तात ३ एस. आर. पी. तुकडया कार्यरत असुन, अवैध वृक्षतोड, व अतिक्रमण निर्मुलनासाठी व त्यावर नियंत्रणासाठी उपयोगात आणण्यात येते. इतर वनवृत्तात अतिक्रमणाच्या गंभीर उपस्थित परिस्थितीनुसार तात्पुरत्या कालावधीकरीता आवश्यकते नुसार त्यांना वनसंरक्षणाच्या कामासाठी पाठविण्यांत येते.

**२७ वनसंरक्षणासाठी विविध वनवृत्तांनी केलेल्या उपाययोजना**

**उच्च स्तरीय समितीच्या शिफारशी :-** गडचिरोली व चंद्रपुर जिल्हयात होत असलेल्या अवैध वृक्षतोडीमुळे अनेक विधानसभा/विधान परिषद/ तारांकित/अतांरांकित प्रश्न/कपात सुचना/आश्वासन इत्यादी उपस्थित होतात, त्यामुळे गडचिरोली व चंद्रपूर जिल्हयात होत असलेल्या अवैध वृक्षतोडीवर आळा घालण्यासाठी शासनाने अध्यक्ष मा.श्री.संजय देवतळे, पालकमंत्री, चंद्रपुर, उपाध्यक्ष मा.श्री.भास्करराव जाधव, राज्य मंत्री (वने), सदस्य मा.श्री.आनंदराव गेडाम, विधानसभा सदस्य, मा.डॉ.नामदेव उसेंडी, विधानसभा सदस्य, मा.श्री.दिपक आत्राम, विधान सभा सदस्य यांचा समावेश असलेली एक उच्चस्तरीय समिती स्थापन केली. सदर उच्चस्तर  समितीने गडचिरोली व चंद्रपूर जिल्हयातील होत असलेल्या अवैध वृक्षतोडीवर आळा घालण्यासाठी सांगोपांग चर्चा करुन समितीच्या शिफारसीचा अहवाल दिनांक २४/०५/२०१३ रोजी शासनास सादर केला आहे. शासन पत्र क्र. टिअसाएस-०६/२०१३/प्र.क्र.१२७/फ-६, दिनांक ०६/०८/२०१३ अन्वये शासन मान्य करण्यात आला आहे.  त्यातील **ठळक बाबी खालील प्रमाणे आहे.**

१) गडचिरोली वनवृत्तातील सिरोंचा वनविभागात ६८ ठिकाणी बेस कॅम्प स्थापन करणे

२) सिरोंचा वनविभागात बेस कॅम्प हाताळण्यासाठी व इतर संरक्षण कामासाठी २०० विशेष सेवा वनरक्षकांची भरती करणे.

३) पोलीस विभागाच्या धर्तीवर वनसंरक्षण कामावर तैनात वनकर्मचा-ांना सोई सुविधा प्रदान करणे

४) चोरटी तोड प्रभावीत क्षेत्रामध्ये एसआरपी तुकडी कायम स्वरुपी ठेवणे.

५) कार्यकारी दंडाधिकारी यांचे अधिकार, सहाय्यक वनसंरक्षक दर्जाच्या अधिका-यांना बहाल करणे

६) नक्षलग्रस्त व तस्करी प्रभावीत क्षेत्रात दळणवळणाच्या सोईसाठी आवश्यक असणा-या वाहनाचा तातडीने पुरवठा करणे आणि शासनातर्फे या बाबतीत विशेष आदेश काढणे.

७) वनविभागाच्या स्तरावर वनगुन्हे हाताळणेसाठी स्वतंत्र विधी सल्लागाराची नेमणूक करणे

८) आवश्यकता भासल्यास तस्कर प्रभावित वनक्षेत्रामध्ये शासनातर्फे शुट ॲट साईटचे आदेश काढणे

**२८. गडचिरोली वनवृत्तातील सिरोंचा वनविभागात अवैध वृक्षतोड नियंत्रणासाठी चालु असलेली कार्यवाही**

- **नदी मार्गाने अवैध वाहतूक :-** सिरोंचा वनविभागाचे पुर्वेला इंद्रावती नदी असून महाराष्ट्र व छत्तीसगढ राज्याच्या सिमेवर वाहते. तसेच दक्षिणेस गोदावरी व पश्चिमेकडे प्राणहिता नदी असून या तीन्ही नद्या आंध्रप्रदेश व छत्तीसगढ राज्याच्या स्वाभाविक सिमा आहेत या तिन्ही नद्या बारमाही वाहत असल्यामुळे गुन्हेगार अवैध वृक्षतोड करुन नदी मार्गाने सागवान लठ्ठयाचे तराफे वाहतुक करतात. त्यामुळे त्याला आळा घालण्यासाठी या वनविभागात महाराष्ट्र राज्याच्या सिमेवरील टेकडा-१ बोट, सिरोंचा-१ बोट, वर्धम-२ बोट, सोमनपल्ली-१ बोट, सोमनूर-१ बोट, देवलमरी-१ बोट, लंकाचेन-१ बोट, पोचमपल्ली-१ बोट, पातागुडम-१, रमेशगुडम-१ बोट असे एकुण ११ बोटी कार्यरत आहेत.

- **गस्ती पथके :-** अवैध वृक्षतोडीवर व वाहतूकीवर नियंत्रण ठेवण्यासाठी सिरोंचा वनाविभागातील असरअल्ली, सिरोंचा, प्राणहिता, झिगानूर व बामणी वनपरिक्षेत्रात **गस्ती पथके** जुलै २००४ पासून स्थापण करण्यात आली असून प्रत्येक गस्ती पथका मध्ये कमीत कमी ७-८ व उपलब्धतेनूसार त्यापेक्षा अधिक वनकर्मचा-याची नेमणूक करण्यात आली आहे. यावृत्ता बाहेरिल वनविभागातून व-नसंरक्षणाचे कामासाठी वनकर्मचारी एक एक महिन्यासाठी बोलावून त्यांना स्थानिक वनकर्मचा-याच्या सोबत गस्ती कॅम्पवर मुक्कामास ठेवण्यात येते व वनसंरक्षणाची कामे करण्यात येतात. तसेच आलापल्ली वनविभागात कोत्तूर, महागवा व मोदूमतुर्रा येथे सुध्दा वनसंरक्षण कामाकरिता गस्तीपथके स्थापन करण्यात आलेली आहे.

- **आंतरराज्यीय बैठक :-** महाराष्ट्र राज्याच्या सिमेलगत असलेल्या राज्यांशी वनाशी निगडीत सर्वसामान्य प्रश्नांवर चर्चा करून ते सोडविण्यासाठी वेळावेळी आंतरराज्यीय बैठक आयोजित करण्यात येतात. सदर बैठकीत सागवनाची अवैध तोड, अवैध शिकारी,तस्करी यावर नियंत्रण करण्यासाठी त्यासंबंधीत माहितीचे आदान प्रदान करण्यात येऊन यावर आळा घालण्यासाठी

उपाययोजना ठरवून अंमलात आणण्यात येत आहेत. याबाबत दिनांक १८/१/२०१२ रोजी बल्लारशहा येथे अपर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक यांचे स्तरावर, दिनांक २५/४/२०१३ रोजी हैद्राबाद येथे प्रधान मुख्य वनसंरक्षक (वन बल प्रमुख) यांचे स्तरावर दिनांक २५/६/२०१३ रोजी मंचेरिअल, जि. अदिलाबाद येथे अपर प्रधान मुख्य वनसंरक्षक यांचे स्तरावर आंतरराज्यीय बैठका आयोजित करणेत येऊन वनसंरक्षणाबाबत उपाययोजना आखण्यांत येत आहेत.

- **टास्क फोर्स :-** पोलीस व वनविभागामध्ये समन्वय साधण्यासाठी चंद्रपूर व गडचिरोली जिल्ह्यात जिल्हा पातळीवर जिल्हाधिकारी यांचे अध्यक्षतेखाली उपवनसंरक्षक व जिल्हा पोलीस अधिक्षक व इतर वनविभागाचे अधिकाऱ्या सोबत टास्कफोर्स गठीत करुन वेळोवेळी बैठकी आयोजीत करुन त्यामध्ये अवैद्य वृक्षतोडीवर नियंत्रण मिळविणेसाठी इतर विभागातील अधिकाऱ्यासोबत समन्वय ठेवण्यात येतो.

**२९. नाशिक वनवृत्तात वनसंरक्षण कॅम्पः-** नाशिक वनवृत्तात पुर्व नाशिक,व पश्चिम नाशिक वनविभागातील शासकीय वनात झालेले अवैध वृक्षतोडचे प्रमाण वाढत आहे. प्रामुख्याने या वनविभागातील वनक्षेत्रांना गुजरात राज्याची आंतरराज्यीय सिमा येत असल्याने तेथील लोकांकडूनही सिमा प्रदेशात घुसकोरी करुन अवैध वृक्षतोड व वाहतुक करण्यांत येते. येथील भाग हा मौल्यीक वनसंपदेचा असुन या वनक्षेत्रामध्ये वनसंरक्षण करणे व चोरटया वाहतुकीवर आळा घालण्यासाठी विशेष उपाययोजना म्हणुन सदर वनक्षेत्रात मौक्याच्या जागेवर वनसंरक्षण कॅम्प तसेच फिरते तपासणी पथके स्थापन करणे व वाहनाद्वारे नियमित पेट्रोलिंग करणे आवश्यक आहे. त्याअनुषंगाने अतिसंवेदनशिल क्षेत्रातील कॅम्प मजदुर साठी माहे डिसेंबर-२०१३ ते मार्च-२०१४ या चार महिन्याच्या कालावधीसाठी पुर्व नाशिक व पश्चिम नाशिक या वनविभागात प्रत्येकी २१ + २० मजुरांचे दोन कॅम्प करीता अनुदान मंजुर झाले असुन कॅम्प करीता लावण्यांत येणारे मजुर हे संयुक्त वनव्यवस्थापन समितीच्या सहभागातुन निवडण्यांत येतील. उपरोक्त कॅम्पमुळे पुर्व नाशिक व पश्चिम नाशिक वनविभागातील चोरटया तुटी व अवैध वनोपज वाहतुकीवर निश्चित आळा बसेल.

---❋❋❋---